स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

बंदर की कोशिकाओं को मनुष्य की कोशिका बताया

प्रसिद्धि पाने के लिए परिमाणों में हेराफेरी करना मानवीय स्वभाव है। कई बार तो ऐसा इसलिए भी किया जाता है क्योंकि आपको अपने निष्कर्ष पर इतना अधिक भरोसा होता है कि आप मानकर चलते हैं कि यदि कोई आंकड़ा उस निष्कर्ष के अनुकूल नहीं है तो वह आंकड़ा गलत होगा। ऐसे में कई बार लगता है कि ऐसे विचलित आंकड़े को 'थोड़ा दुरुस्त' करने में कोई बुराई नहीं है। अलबत्ता, विज्ञान की प्रक्रिया में यह निहित है कि जिस भी कारण से की जाए, हेराफेरी अंततः पकड़ी जाती है।

जैसे हारवर्ड मेडिकल स्कूल में पैथॉलॉजी के प्रोफेसर जॉन लॉन्ग का ही प्रकरण लें। उन्हें 1980 में अपनी प्रोफेसरी से इस्तीफा देना पड़ा था। उन्होंने कबूल किया था कि उन्होंने एक प्रतिरक्षा अणु के अणु भार का मनगढ़ंत आंकड़ा प्रस्तुत किया था। उनके मुताबिक उन्होंने ऐसा इसलिए किया था ताकि उनका जो शोध पत्र एक पत्रिका ने नामंज़ूर कर दिया था, उसे किसी अन्य जर्नल में प्रकाशित करवा सकें।

डॉ. लॉन्ग उस समय अपने कैरियर के शिखर पर थे। उन्होंने हॉजकिन्स रोग की कोशिकाओं का पहला कल्चर तैयार कर लिया था जो लंबे समय तक जीवित रह सकता था। इस कोशिका कल्चर की मदद से यह दर्शाया जा सका था कि हॉजकिन्स रोग वास्तव में हमारे शरीर की प्रतिरक्षा कोशिकाओं (जिन्हें मैक्रोफेज कहते हैं) का ट्यूमर है। मगर बाद में पता चला था कि ये कोशिकाएं मनुष्य की थी ही नहीं। ये तो उत्तरी कोलंबिया के ब्राउन फुट ऑउल बंदर की थीं। यह तो पता नहीं चल पाया कि ऐसा गलती से हुआ था या जानबूझकर किया गया था मगर जैसे ही डॉ. लॉन्ग को भनक लगी कि लोग उनके इस कल्चर पर शंका कर रहे हैं, तो उन्होंने इस कल्चर को नष्ट कर दिया था।

Researcher Admits Faking Cancer Cell Experiments

Public Notices

Public Notices

डॉ. लॉन्ग का कहना है कि उन्होंने यह हेराफेरी अनुसंधान अनुदान पाने के लिए की थी। वे सफल भी रहे थे और 1979 में उन्हें 5 लाख डॉलर का अनुदान मिल भी गया था। मगर हाय रे विज्ञान, चालाकी पकड़ी गई।

प्रकाशक, मुद्रक अरविन्द सरदाना की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी